विद्यार्थियों को सिखाया खेती करने का प्रायोगिक तरीका

चित्तौड़गढ़ (प्रातःकाल संवाददाता)। कृषि विज्ञान केन्द्र पर ग्रामीण कृषि कार्यानुभव कार्यक्रम के तहत मेवाड़ विश्वविद्यालय एवं रविन्द्र नाथ टैगोर कृषि महाविद्यालय के बी.एसी.कृषि अंतिम वर्ष के 23 छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह प्रशिक्षण 45 दिन तक चलेगा। केन्द्र केवरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. रतन लाल सोलंकी ने बताया कि ग्रामीण कृषि कार्यानुभव के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं को पंचदेवला एवं सुखवाड़ा गांव आंवटित किया गया है जिसमें छात्र-छात्राओं को ग्रामीण परिस्थितियों में किसानो द्वारा अपनाई गई कृषि प्रौद्योगिकियो एवं उनकी समस्याओं से रूबरू होने का मौका मिलेगा साथ ही किसानो की कृषि समस्याओं के समाधान के अवसर प्राप्त होगे। दीपा इन्दौरिया ने बताया कि छात्र-छात्राएं गांव के किसानो से सपंर्क कर भूमि की स्थिति, जलवायु, कृषि परिस्थिति, सिंचाई के साधन कृषि प्रणाली, फसल विविधिकरण, फसलो में बीज उपचार, भूमि उपचार, उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग, खेत की जुताई से कटाई तक का प्रबंधन, भंण्डारण, लाभप्रद कृषि व्यवसाय जैसे पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, कृषि बाजार प्रणाली, कृषि योजनाओं आदि का किसानो से बातचीत के आधार पर ब्यौरा तैयार करेगे, साथ ही छात्रो को अनुशासन में रहते हुए किसानो से कृषि, पशुपालन एवं बागवानी का अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

विद्यार्थियों को कृषि सम्बन्धी जानकारी देते विशेषज्ञ।

Pratahkal 16-11-2022

ग्रामीण कृषि कार्यानुभव के विद्यार्थियों ने सीखा खेती का तरीका

गंगरार, 15 नवम्बर (जसं.) । कृषि विज्ञान केन्द्र पर ग्रामीण कृषि कार्यानुभव (रावे) कार्यक्रम के तहत मेवाड़ विश्वविद्यालय गंगरार एवं रविन्द्र नाथ टैगोर कृषि महाविद्यालय कपासन के बीएससी कृषि अंतिम वर्ष के 23 छात्र-छात्राओं को 45 दिन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. रतन लाल सोलंकी ने बताया कि ग्रामीण कृषि कार्यानुभव के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं को पंचदेवला एवं सुखवाड़ा गांव आंवटित किया गया है। जिसमें छात्र-छात्राओं को ग्रामीण परिस्थितियों

में किसानो द्वारा अपनाई गई कृषि प्रौद्योगिकियों एवं उनकी समस्याओं से रूबरू होने का मौका मिलेगा। इसके साथ ही किसानों की कृषि समस्याओं के समाधान के अवसर प्राप्त होगे। डॉ. सोलंकी ने बताया कि रावे के विद्यार्थियों के केन्द्र के फार्म व नर्सरी में भी प्रायोगिक कार्यों में पॉलाथीन थैली में मिट्टी, बीज एवं खाद भरना, बीजों की नर्सरी करना, पौधों पर बडिंग, ग्राफ्टिंग करने कार्य, जैविक, वर्मी कम्पोस्ट, वर्मीवॉश व डी कम्पोजर आदि तैयार करने के तरीके सिखाए जाएंगे।

विद्यार्थियों को केन्द्र पर रबी फसल चने के बीज को उपचारित करने का तरीका एफआईआर करने का प्रायोगिक तरीका एवं सरसों की फसल में निराई, गुड़ाई, खड़ी फसल में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का प्रयोग करने की प्रायोगिक तकनीकी के बारे में विस्तृत से बताया गया। इसके साथ ही एवं केन्द्र पर स्थापित कृषि मौसम इकाई का महत्व एवं मौसम संबंधित डाटा लेने के बारे में बताया। दीपा इन्दौरिया ने बताया कि छात्र-छात्राएं गांव के किसानों से सपंर्क कर भूमि की स्थिति, जलवायु, कृषि परिस्थिति, सिंचाई के साधन कृषि प्रणाली, फसल विविधिकरण, फसलों में बीज उपचार, भूमि उपचार, उर्वरक प्रबंधन, कीट एवं रोग, खेत की जुताई से कटाई तक का प्रबंधन, भण्डारण, लाभ प्रद कृषि व्यवसाय जैसे पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, कृषि बाजार प्रणाली, कृषि योजनाओं आदि का किसानों से बातचीत के आधार पर ब्यौरा तैयार करेंगे।

Jannayak 16-11-2022